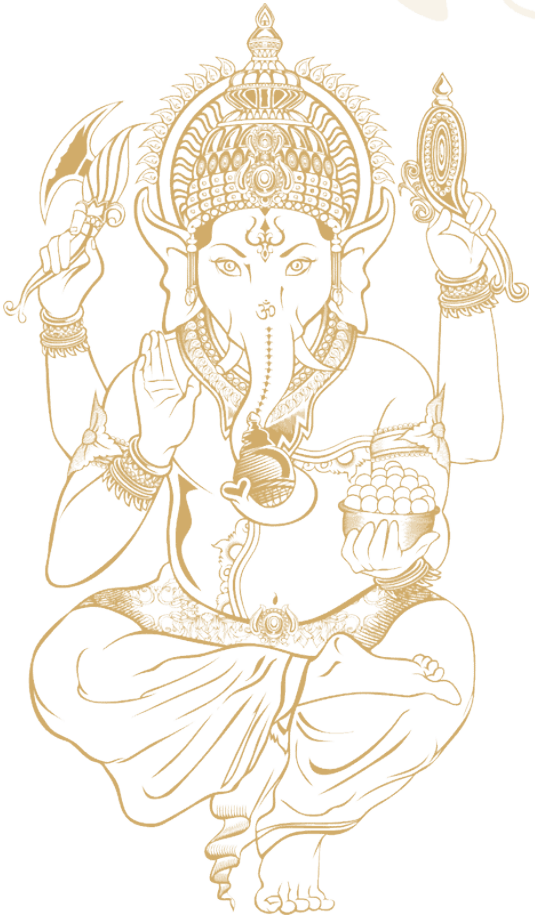

Mahima ji

22 Mar 1997

03:30 PM

Jaipur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121411401**

तिथि 22/03/1997 **समय** 15:30:00 **वार** शनिवार **स्थान** Jaipur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:05
अक्षांश 26:53:00 उत्तर **रेखांश** 75:50:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:26:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	03:03:07 घं
वेलान्तर	00:06:55 घं
सूर्योदय	06:28:56 घं
सूर्यास्त	18:38:40 घं
चैत्रादि संवत	2053
शक संवत	1918
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	14
नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
योग	शूल
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	मूषक
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टा-टपकेश्वरी
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

शुक्र 12वर्ष 2मा 27दि

मंगल

18/06/2025
18/06/2032

मंगल	14/11/2025
राहु	03/12/2026
गुरु	09/11/2027
शनि	17/12/2028
बुध	15/12/2029
केतु	13/05/2030
शुक्र	13/07/2031
सूर्य	18/11/2031
चन्द्र	18/06/2032

योगिनी

उल्का 3वर्ष 8मा 2दि

भद्रिका

23/11/2025
23/11/2030

भद्रिका	03/08/2026
उल्का	04/06/2027
सिद्धा	24/05/2028
संकटा	04/07/2029
मंगला	23/08/2029
पिंगला	03/12/2029
धान्या	04/05/2030
भ्रामरी	23/11/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			27:06:53	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	---	0:00			
सूर्य			08:00:19	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	मित्र राशि	1.21	पुत्र	पितृ	वध
चंद्र			18:30:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.09	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल	व		00:57:49	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	राहु	शत्रु राशि	1.07	कलत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			18:34:30	मीन	रेवती	1	बुध	केतु	नीच राशि	0.67	अमात्य	ज्ञाति	मित्र
गुरु			19:24:32	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	नीच राशि	1.05	आत्मा	धन	विपत
शुक्र		अ	05:10:29	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	उच्च राशि	1.13	ज्ञाति	कलत्र	वध
शनि		अ	15:21:54	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.03	मातृ	आयु	वध
राहु			04:56:02	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			04:56:02	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

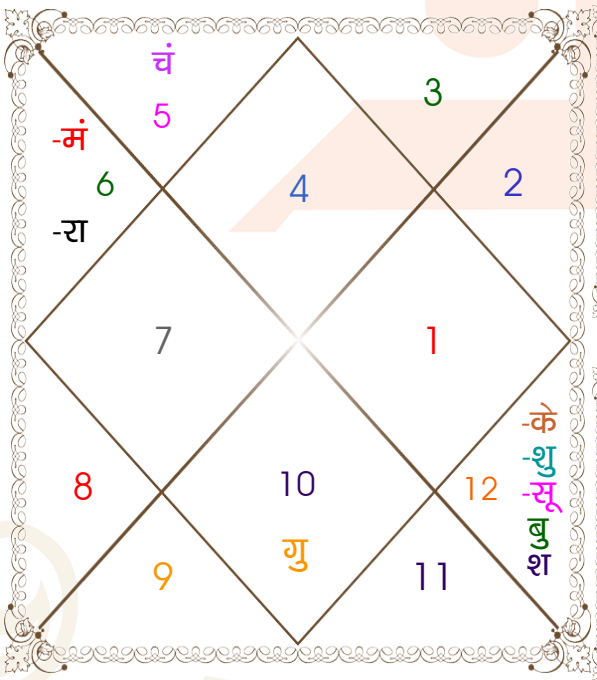

चन्द्र कुंडली

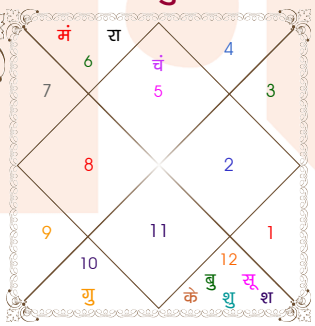

नवमांश कुंडली

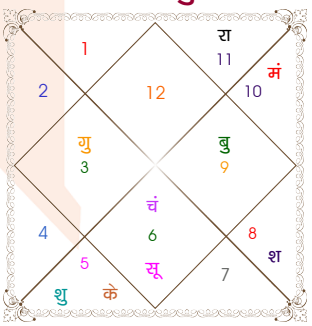

सर्वाष्टकवर्ग

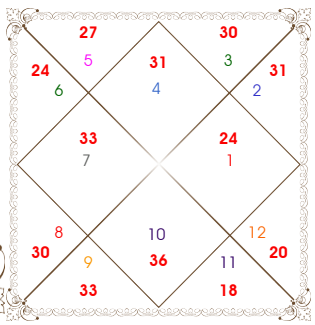

दशमांश कुंडली

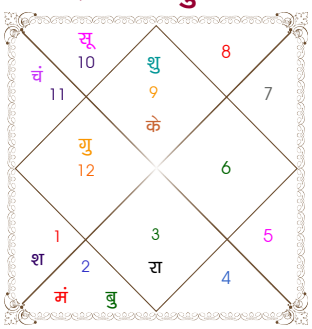

नक्षत्रफल

आप पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी मध्य, वर्ग श्वान, गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय तथा योनि मूषक होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ट" या "टा" अक्षर से होगा।

आप अपने जीवन में विद्यार्जन करने में सफल रहेंगी। आप स्वभाव से गम्भीर होंगी तथा गम्भीरतापूर्वक ही आपके जीवन के समस्त कार्यकलाप पूर्ण होंगे। पति के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा उनकी प्रिय एवं सम्माननीय होंगी। आप अपने जीवन काल में समस्त सुख ऐश्वर्य एवं वैभव से भी युक्त रहेंगी। श्रेष्ठ विद्वान जन भी आपको सम्माननीय तथा पूजनीय समझेंगे।

विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः।
पूर्वाफाल्गुनिकां जातः सुखी पंडित पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्या, गौ एवं धन से सम्पन्न, गम्भीर प्रकृति वाला, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा विद्वानों द्वारा पूजनीय होता है।

आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मृदुवाणी का अपने भाषण में प्रयोग करेंगी फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा जिससे लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही दान देने की प्रवृति भी आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर इस प्रवृति का पालन करेंगी। आपका शरीर भी सुन्दर एवं कान्तिमय रहेगा। साथ ही आप यात्राएं तथा भ्रमण की भी रूचिशील रहेंगी तथा अधिकांश समय इसी पर व्यतीत करेंगी। इसके अतिरिक्त आप राज्यसेवा में भी तत्पर रहेंगी।

प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक प्रिय वक्ता, व्यवहारज्ञ, दानप्रिय, कान्तियुक्त शरीर वाला, यात्रा प्रिय तथा राज्य में राजसेवक होता है।

चंचलता के भाव की बहुलता नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी। आपकी प्रवृति यदा कदा दुष्कार्यों को करने की ओर भी प्रवृत रहेगी। साथ ही त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगी तथा अवसरानुकूल समाज में अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगी। आपका जो भी संकल्प होगा वह दृढ़ होगा तथा दृढ़ता के साथ ही आप उसे पूरा करेंगी।

फल्गुन्यां चपलः कुकर्मस्त्यागी दृढ़ कामुको।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वा फाल्गुनी में उत्पन्न जातक चंचल, कुकर्म करने वाला, त्यागी, दृढ़ तथा कामवासना प्रधान व्यक्ति होता है।

आप स्वभाव से ही साहसी तथा निर्भय होंगी तथा वीरता के भावों से परिपूर्ण रहेंगी। आप बहुत से अन्य लोगों का पालन पोषण करने वाली होंगी तथा उन्हे पूर्ण सुख प्रदान करेंगी। आपकी आखें भी देखने में छोटी होंगी तथा आपके समस्त कार्य दक्षता से सम्पन्न होंगे। एतादिरिक्त आप अभिमानी भी होंगी तथा यदा कदा इसका भी प्रदर्शन करेंगी।

शूरस्त्यागी साहसी भूरिभर्ता कामार्तोऽपिस्याच्छिरालोऽतिदक्षः।
धूर्तः क्रूरोऽत्यन्त सत्रजातगर्वः पूर्वाफाल्गुनयास्ति चेज्जन्मकाले।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी में उत्पन्न जातक शूरवीर, दानी, बहुतों का पोषक, चतुर, धूर्त, कामातुर, कठोर हृदय और अतिघमण्डी होता है।

आप रजत पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः जीवन में आप धन सम्पति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा कभी भी इसके अभाव की अनुभूति नहीं करेंगी। साथ ही जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को आप अर्जित करेंगी एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा दानशीलता के भाव से नित्य युक्त रहेंगी। साथ ही आप में सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में शीघ्र ही इच्छित सफलता प्राप्त होगी। शरीर से आप अत्यन्त ही कान्ति युक्त रहेंगी तथा आपकी मुखाकृति भी सुन्दर एवं दर्शनीय रहेगी। समाज में आप आदरणीय तथा श्रद्धेय महिला समझी जाएंगी। आप का परिवार भी विस्तृत रहेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। विद्याध्ययन के क्षेत्र में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी तथा एक विदुषी के रूप में ख्याति अर्जित करने में सफल होंगी। इसके अतिरिक्त आप प्रायः अल्प मात्रा में बोलना ही पसन्द करेंगी।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप तीव्र तथा उग्र स्वभाव से युक्त रहेंगी। आपका हनुभाग स्थूल तथा मुख मंडल विशाल होगा। साथ ही आखें भी पीतवर्ण से युक्त होकर छोटी छोटी होंगी। जंगलों तथा पहाड़ों में घूमना आपको बहुत ही रूचिकर लगेगा। आप कभी कभी बिना किसी कारण के शीघ्र ही उत्तेजित हो जाने वाली होंगी तथा आपकी इच्छाएं बहुत अधिक होगी जो प्रायः अपूर्ण ही रहेंगी इससे आपको हमेशा कष्टानुभूति होती रहेगी। आप दानशील होंगी तथा जरूरतमन्द लोगों को समय समय पर दान दिया करेंगी आपका स्वभाव अभिमानी भी रहेगा। माता की आप प्रिय होंगी तथा संतति में पुत्रों की संख्या कम ही रहेगी। आपकी बुद्धि चंचल न होकर स्थिर होगी तथा सभी कार्यों को बुद्धिमानी से पूर्ण करेंगी।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।

बृहज्जातकम्

आपकी शरीर की हडिड्यां मजबूत होंगी तथा स्वभाव में उग्रता की बहुलता रहेगी। किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पहले आप कंठ से ध्वनि निकालेंगी। आपका वक्ष सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप अपने पराक्रम से समाज में पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप हमेशा सजग तथा सावधान रहेंगी एवं किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले आप गम्भीरता पूर्वक चारों तरफ की स्थितियों का निरीक्षण करेंगी तथा सन्तुष्ट होने पर ही कार्य को प्रारम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दातातीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगररतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।

सारावली

आप उदर पोषण योग्य जीविकार्जन से परम संतुष्टि प्राप्त करने वाली होंगी। गहन गुफाओं के प्रति आपके मन में उत्सुकता तथा रूचि रहेगी। साथ ही आप सेवक तथा बन्धुवर्ग से युक्त रहेंगी। आपका वक्षभाग भी अत्यन्त विस्तृत होगा।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।

फलदीपिका

क्षमाशीलता का गुण स्वभाव से ही आप में विद्यमान रहेगा तथा दण्ड देने की अपेक्षा आप क्षमा करना उचित समझेंगी। आप हमेशा अपने किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगी खाली या बिना किसी काम के बैठना आपको उचित नहीं लगेगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।

जातकदीपिका

मांस तथा मदिरा का प्रयोग भी आप अवसरानुकूल करती रहेंगी तथा हमेशा दूर समीप की यात्राओं में भी व्यस्त रहेंगी तथा भ्रमण में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। शीत से आपको अत्यधिक डर तथा घबराहट की अनुभूति होगी। आपके समस्त मित्र गुणवान होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार विनम्रतापूर्ण रहेगा। आप शीघ्र ही क्रोध से उत्तेजित होने वाली होंगी तथा माता पिता का आपके प्रति विशेष प्यार तथा स्नेह का भाव रहेगा। आप कई व्यसनों से भी युक्त होंगी फिर भी समाज में आप प्रसिद्ध तथा यश से पूर्ण रहेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें तथा शारीरिक संरचना अत्यन्त ही सुन्दर, आकर्षक तथा मनोहर होगी जिसे देखकर सभी आपसे प्रभावित होंगे। आपकी दृष्टि या अवलोकन शक्ति भी गम्भीरता से युक्त रहेगी तथा किसी भी स्थिति का गम्भीरता पूर्वक अवलोकन करने के पश्चात उसे किसी कार्य के लिए उचित या अनुचित का निर्णय करेंगी। साथ ही आप समस्त सुख तथा ऐश्वर्य का उपभोग करके आनन्द पूर्वक जीवन को व्यतीत करेंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा सम्पूर्ण धार्मिक कृत्यों का पालन करेंगी एवं देवता तथा ब्राहमणों में अपनी गहन श्रद्धा भी प्रदशित करेंगी। कभी कभी आप छोटी छोटी बातों पर भी गर्व के भाव का प्रदर्शन करेंगी। आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप कई प्रकार की कलाओं में भी चतुर होंगी। आप ज्ञानार्जन में सफल रहेंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय होगी। इसके अतिरिक्त आप बहुत से लोगों को भी सुख प्रदान करने वाली होंगी।

आप समाज में एक सम्माननीय महिला होंगी तथा धनैश्वर्य से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी साथ ही आप निशानेबाजी में विशेष योग्यता भी प्राप्त करेंगी। आपका गौरवर्ण होगा तथा नगर वासियों को वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी। साथ ही आप की आखें भी बड़ी होंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप तीव्र बुद्धि से युक्त रहेंगी साथ ही सर्व प्रकार के धन धान्य तथा वैभव ऐश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगी। अपने कार्य को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी तथा आलस्य को कभी भी पास नहीं आने देंगी साथ ही आप अभिमानी प्रवृति की भी उपेक्षा करेंगी परन्तु आप अन्य जनों पर विश्वास कम ही करेंगी तथा जो भी कार्य करवाना हो उसे अपने ही सम्मुख पूर्ण करवाएंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोऽप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपके शुभ प्रभाव से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनकी पूर्ण वात्सल्य भावना रहेगी तथा जीवन में विद्याध्ययन या धन संबंधी कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही उनसे आप अवसरानुकूल महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगी। इसके साथ ही वे आपको हार्दिक सहयोग देंगी। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध भी अच्छे रहेंगे।

आप भी उनसे पूर्ण प्रभावित रहेंगी तथा उनके कथनानुसार ही अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करेंगी। साथ ही जीवन में उनकी सेवा तथा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से आप उनकी सहायता करती रहेंगी। अतः परस्पर मधुर संबंध एवं विश्वास होने के कारण आप आनन्दपूर्वक जीवन में उनका स्नेह प्राप्त करती रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र,

धृतियोग, बवकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ रहेंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों में, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शरीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान अथवा अन्य कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य देव की उपासना करनी चाहिए तथा अर्ध्य भी प्रदान करना चाहिए साथ ही रविवार का भी उपवास रखना चाहिए। इसके साथ ही सोना, माणिक्य, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, गेहूं, गुड़ इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।